बरसों बाद भी जान लेती हैं बारूदी सुरंगें

भारत डोगरा

क्या आप ऐसे हथियारों के बारे में जानते हैं जो युद्ध के कई वर्ष बाद भी जानलेवा सिद्ध हो सकते हैं? जी हां, न केवल ऐसे हथियार दुनिया में मौजूद हैं अपितु प्रति वर्ष हज़ारों लोगों की बहुत दर्दनाक मौत का कारण भी बन रहे हैं। बहुत से लोगों को इन हथियारों ने जीवन भर के लिए अपंग भी बना दिया है।

इस तरह का एक बहुत खतरनाक हथियार है बारूदी सुरंग। धरती पर या इसके भीतर बिछाई जाने वाली बारूदी सुरंग (लैंड माइन) का आरंभ युद्ध में शत्रु सेना के टैंकों को रोकने के लिए या ध्वस्त करने के लिए किया गया था। इनमें ऐसे विस्फोटक रखे जाते थे जो टैंकों के संपर्क में आने से फट जाते थे। इनका आकार बड़ा होने के कारण ये अपेक्षाकृत आसानी से नज़र आ जाती थीं और इन्हें शत्रु सेना हटा देती थी। इसके बाद टैंक-रोधी बारूदी सुरंगों के स्थान पर मनुष्य रोधी बारूदी सुरंगों का उत्पादन व उपयोग शुरू हुआ। इनसे संपर्क में आने पर ये फट पड़ती हैं और एक या अधिक मनुष्य इनके प्रभाव से बुरी तरह घायल हो जाते हैं, अपंग हो जाते है या मर भी सकते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध में इन बारूदी सुरंगों का व्यापक उपयोग सीमा रेखा, फौजी कैंप, महत्वपूर्ण पुल आदि की रक्षा के लिए व शत्रु सेना की रफ्तार को कम करने के लिए किया गया था।

युद्ध समाप्त होने के बाद भी प्रायः बहुत समय तक बारूदी सुरंगों को हटाया नहीं जाता है, या पूरी तरह नहीं हटाया जाता है। अतः युद्ध समाप्त होने के बाद भी बच्चों व महिलाओं सहित अनेक निर्दोष नागरिक इनका शिकार बनते रहते हैं। इसके कारण आसपास के समुदाय निरंतर भयभीत रहते हैं, व अपने खेतों, चारागाहों व आजीविका के स्थानों तक नहीं पंहुच पाते हैं।

बारूदी सुरंगों के विस्फोट से न केवल अंग-भंग हो जाता है, अपितु गंभीर चोट लगे स्थान में धूल-कंकड़ व अन्य नुकीले पदार्थ भी घुस जाते हैं जिससे बार-बार तकलीफ होती है व कई बार सर्जरी की ज़रूरत पड़ सकती है।

युद्ध के बाद बारूदी सुरंगों को हटाने में होने वाली देरी की एक वजह यह भी है कि मनुष्य-रोधी सुरंगों को हटाने का काम काफी कठिन व महंगा हो सकता है। जहां ऐसी एक सुरंग का उत्पादन मात्रा एक डॉलर में हो जाता है, वहीं इसे हटाने का खर्च एक हज़ार डॉलर तक भी हो सकता है। इसलिए प्रायः युद्ध या युद्ध की तैयारी के कई वर्ष बीत जाने के बाद भी बारूदी सुरंग के फटने से लोगों के मरने, घायल व अपंग होने के समाचार मिलते रहते हैं।

इसी तरह का एक दूसरा हथियार है क्लस्टर बम। क्लस्टर बम एक तरह का बड़ा खतरनाक डिब्बा है जिसमें बहुत से छोटे पर अति विस्फोटक बम छिपे रहते हैं। जब इसे तोप, हवाई जहाज़ या मिसाइल से गिराया जाता है तो यह डिब्बा खुल जाता है व इसमें से निकलने वाले सैकड़ों छोटे-छोटे बम दूर-दूर तक फैल जाते हैं। स्पष्ट है कि इस तरह का हथियार शत्रु सेना के लिए बहुत खतरनाक है। पर चूंकि यह छोटे विस्फोटकों को 600 मीटर की दूरी तक किसी भी दिशा में फेंक सकता है अतः निर्दोष नागरिकों के मरने की संभावना भी बढ़ जाती है।

सबसे चिंताजनक बात तो यह है कि निर्दोष नागरिकों के मरने की संभावना कई वर्षों तक बनी रहती है। जो विस्फोटक क्लस्टर बम द्वारा दूर-दूर तक फैलाए जाते हैं, उनमें से सबका विस्फोट उसी समय नहीं होता है। बाद में

कोई व्यक्ति उनके संपर्क में आता है तो अचानक विस्फोट हो जाता है। बच्चों के लिए यह संभावना और भी अधिक है क्योंकि वे कई बार इसे खिलौना या आकर्षक वस्तु समझकर उठा लेते हैं। इस तरह युद्ध समाप्त होने के बाद भी कई वर्षों तक निर्दोष व्यक्ति इनके कारण मरते रहते हैं या बुरी तरह से घायल होते रहते हैं।

अभी तक हमने उन हथियारों के बारे में बताया जो विस्फोट के कारण घातक होते हैं। पर कुछ हथियार ऐसे भी हैं जिनसे निकलने वाली रेडियोधर्मिता उनके उपयोग के अनेक वर्ष बाद कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती है। हालांकि परमाणु बमों का उपयोग तो हिरोशिमा-नागासाकी के बाद नहीं हुआ है, पर डिप्लीटेड अर्थात क्षरित यूरेनियम के हथियारों का उपयोग ईराक, अफगानिस्तान व संभवतः पूर्व युगोस्लाविया के क्षेत्र में भी किया गया है जिससे विशेषकर ईराक में कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के बहुत बढ़ जाने के बेहद चिंताजनक समाचार मिले हैं।

हाल के समय में इनमें से कुछ खतरनाक हथियारों पर रोक लगाने के कुछ प्रयास हुए हैं जिनसे इनके कारण होने वाली क्षति में कमी आई है।

बारूदी सुरंगों के व्यापक दुष्परिणामों को देखते हुए ओटावा संधि के नाम से एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता वर्ष 1997 में हुआ था। इस समझौते द्वारा मनुष्य-रोधी बारूदी सुरंगों के विकास, उत्पादन, भंडारण, व्यापार, बिक्री व उपयोग पर रोक लगाई गई है। लगभग 155 देश इस समझौते पर हस्ताक्षर कर चुके हैं, पर लगभग 40 देशों ने इस समझौते पर अभी हस्ताक्षर नहीं किए हैं। इन 40 देशों के पास लगभग 16 करोड़ मनुष्य-रोधी बारूदी सुरंगें हैं।

बारूदी सुरंगों को प्रतिबंधित करने के अंतर्राष्ट्रीय अभियान से लगभग 90 देशों में 1400 से अधिक संगठन व ग्रुप जुड़े हैं। इस अभियान को वर्ष 1997 में नोबल शान्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

वर्ष 2006 के उपलब्ध रिकार्डों के अनुसार बारूदी सुरंगों से 68 देशों में 4296 व्यक्ति घायल हुए थे व 1367 व्यक्ति मारे गए थे। पूरे विश्व में इस कारण घायल, अपंग व मारे जाने वाले व्यक्तियों की वास्तविक संख्या इससे अधिक है। फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि जब से बारूदी सुरंगों के विरुद्ध विश्व स्तर के अभियान ने ज़ोर पकड़ा है तब से बारूदी सुरंगों के कारण मारे जाने वाले या घायल होने वाले व्यक्तियों की संख्या में कमी आई है। वर्ष 2002 में दर्ज हुए आंकड़ों के अनुसार इन घायलों व मृतकों की संख्या 11700 थी जबकि वर्ष 2006 के आंकड़े इससे आधे से भी कम हैं।

बारूदी सुरंगों पर रोक की ओटावा संधि के समान हाल ही में क्लस्टर बम के प्रसार को रोकने के प्रयास भी शुरू हुए हैं। क्लस्टर बमों के उत्पादन, उपयोग, बिक्री व भंडारण पर रोक लगाने सम्बंधी समझौते पर दिसंबर 2008 में कई देशों ने हस्ताक्षर किए हैं।

अब ज़रूरत इस बात की है कि इन प्रयासों को और व्यापक किया जाए व ऐसे प्रयास क्षरित यूरेनियम हथियारों को कम करने के लिए भी किए जाएं। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता सिर्फ 150 रुपए

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से

ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

के पते पर भेजें।